प्रश्न उत्तर

प्रस्तुति-मधुलता

प्रश्न हमारे उत्तर श्री अशोक 'मानव' जी के

प्र०-: डर किसको लगता है। ज्ञानी को या अज्ञानी को?

उ०-: डर ज्ञानी को लगता है अज्ञानी को डर नहीं लगता है। जिसको पता ही नहीं है कि जंगल में भूत भी रहते हैं।वह चला जा रहा है उसे कोई डर नहीं लगता। जिसको पता है कि यहाँ भूत रहता है। वहाँ जाते ही उसके हाथ पाँव फूल जाते है। जिसको पता ही नहीं उसको क्या डर लगेगा। जानवर जंगल में ही घूमते है उन्हें कोई भूत नहीं लगता। आप डरे हुये हैं इसलिए तमाम भूत आपको लग रहे हैं।

प्र०-: दिशा शूल का क्या महत्व है?

उ०-: यह तो अपने अनुभव की बात है। जैसे-पहले कोई व्यक्ति किसी दिन किसी एक दिशा में जाता है और वहाँ कोई दुर्घटना घटती है तो उस दिन उस दिशा को शूल मान लिया गया। चूंकि मन में आप ऐसा मान बैठे है उसके बाद आप उस क्रिया को कर रहे हैं तो उसका प्रभाव पड़ता है। हिन्दू धर्म के अलावा दूसरे धर्म वाले नहीं मानते उनको कुछ नहीं होता। यह मानव मानसिकता के विकास का ही परिणाम है वैज्ञानिकता कुछ नहीं। पौराणिक कथा में भी इसी प्रकार है कि उस दिन कोई किसी दिशा में गया आर वहाँ उसको कोई परेशानी हो गयी या काई दुघर्टना हो गयी या जिस कार्य के लिए निकले वह काम नही हुआ इसलिये बार-बार अनुभव के बाद यह निश्चित कर लिया किइस दिन इस दिशा जाना अशुभ है।इस तरह दिशा शूल का जन्म हुआ।

प्र०-: दक्षिण दिशा में पैर क्यों नहीं किये जाते हैं?

उ०-: दक्षिण दिशा में हिन्दू धर्म के अनुसार मरने के बाद पैर किये जाते है।दक्षिण दिशा नकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र है रावण राज दक्षिण में ही था दक्षिण दिशा में पैर करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है।इसलिए ऐसी मान्यता है कि दक्षिण दिशा में पैर नहीं किये जाते हैं।

प्र०-: मानव के सोचने मात्र से काम होने लगता है यह कैसे सम्भव है?

उ०-: इसमें ऐसा होता है कि जो मानव का विचार होता है, जो मानव सोचता है, सोचने की क्रिया होती है। उसमें सूर्य और जल (पुरूषत्व और स्त्रित्व) दोनों के गुण मौजूद रहते हैं। दोनों के मिलने से ही जीवन का निर्माण होता है और जब वह निर्माण हो जाता है। उसमें से जो भाव बनता है, जो मानव सोचता है उसमें प्रकाश रूप के गुण की ऊर्जा निकलती है। वही समय बनता है जब समय बनता है। वही समय उस गुण के नये विचारधारा के लोगों की उत्पत्ति करता है। उसी तरह के गुण को फैलाता है। उसी तरह की विचाधारा फैलाकर समाज में एक नये युग का निर्माण करता है। जो कि हम लोग कहते है कि समय नहीं अच्छा, जो यह समय मानव से ही निकल जाता है। वह बीज रूप में मौजूद रहता है। प्रकृति में ज बवह उचित क्लाइमेट्स (वातावरण) पाता है तो समयानुसार वह वृक्ष बनता है। जो अपना विस्तार करता है और फल देता है। मानव के अन्दर जो विचार चलता रहता है। उसकी ऊर्जा प्रकृति में निकलती रहती है। हर तरह की विचार की ऊर्जा अलग-2 इकट्ठा होती रहती है और वही भविष्य का समय बनता है। जो कुछ भी जो सोच रहा है, कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता है सब इकट्ठा होता है। अच्छा विचार निकलता है तो आने वाले समय में अच्छे समय का निर्माण होगा। खराब विचार निकलता है तो खराब समय का निर्माण होता है। जो भी सोच रहा है कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता है। जिसकी अधिकता हो जायेगी उसी का वर्चास्व रहेगा कम सोच दब जायेगी। उदाहरणाथ- 60-70 प्रतिशत लोग राजतंत्र की मांग कर रहे हैं। उनके भाव में यह है कि लोकतंत्र सफल नही हो पा रहा है। उनका यह भाव निकलेगा। वह राजतंत्र की स्थापना कर देगा। अगर 60-70 प्रतिशत लोग नहीं सोचते तो कुछ-कुछ लोग सोचते है और अगली पीढ़ी भी सोचने लगती है । जब 60-70 प्रतिशत,हो जायेगा तो राजतंत्र की स्थापना हो जायेगी। पहले राजतंत्र ही था तब काई राजा क्रूर निकल जाता था वह शोषण भी करता था। राजा को चुनने का अधिकार जनता को मिलना चाहिए।